अध्याय - द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है साहित्य का सावधानीपूर्वक पुनरावलोकन अनुसंधान के संबंधित क्षेत्र में जानकारी प्रदान करता है तथा उसके क्षेत्र की सीमा में स्थित चरों को चुनने में मदद करता है, कार्य की पुनरावृत्ति को रोकता है, पूर्व में किया गया अध्ययन वर्तमान अध्ययन के लिए आधारशिला का कार्य करता है। साहित्य के पुनरावलोकन के माध्यम से एक अनुसंधानकर्ता भावी अनुसंधाना के लिए अच्दा परिदृश्य बनाता हं। साहित्य का सृजन पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को वर्तमान अध्ययन से संबंधित पूर्व में किये गये अध्ययनों को एकत्रित तथा स्वीकृत करने में सहायक होता है। पूर्व के अध्ययनों का एकीकृत संग्रह अनुसंधानकर्ता को संबंधित शोध को पहचानने में भी मदद करता है।

व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किय जा सकता है, अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करते है, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है, ज्ञान वं अथाह भंडार में मानव का निरन्तर योगदान सभी क्षत्रों में उसके विकास का आधा है।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकनः–

संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को किस क्षेत्र में वह अनुसंधा करने वाला है, उसे वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती है, तथा निम्नलिखित उद्देश पूर्ण करती है।

1. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है ।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है ।
3. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को पूर्व में किये गये शोधकार्य की पुनरावृत्ति करने से रोकता है ।
4. पूर्व अनुसंधानों से अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है ।
5. उपयुक्त शोध विधियों के चयन में मदद करता है ।
6. परिकल्पना को लागू करने तथा अनुसंधान की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायक होता है ।
7. तुलनात्मक अध्ययन व तत्संबंधी व्याख्या हेतु आंकड़ों का निर्धारण करने में मदद करता है ।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है ।

2.3 शोध से संबंधित साहित्य :–

प्रस्तुत समस्या से पूर्व कार्य का पुनरावलोकन इस प्रकार है ।

1. **व्यास अमरचंद (1971):–**

ने राजस्थान राज्य के जिला बीकानेर शहर प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं को जानने का प्रयास किया और पाया कि 75 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि अतिरिक्त अन्य कार्यो में नियोजित करना। उपयुक्त योग्यता प्राप्ति पर पदोन्नति न देना, पुस्तकालयों में समय पर पुस्तके न मिलना और उच्च अधिकारियों से उपेक्षित व्यवहार सहन करना बताया। 60 प्रतिशत अध्यापकों ने रूचिकार विषय अध्यापन हेत न मिलना एवं शिक्षण कालांश में अन्य कार्य करना बताया ।

2. **भारद्वाज, आर.पी. (1987):–**

ने यह परीक्षण करता है कि निर्देशात्मक सामग्री उपचारात्मक शिक्षण उपकरण के रूप में प्रभावशाली होती है । इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए गणित विषय से संबंधित मानकीकृत निदानात्मक परीक्षण का निर्माण करना, विभिन्न इकाईयों में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों की पहचान करना और त्रुटियों में सुधार करने हेतु उपचारात्मक सामग्री का निर्माण करना था । इस अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :–

1. परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक 0.81 से 0.91 तक प्राप्त हुआ ।
2. परीक्षण का वैद्यता गुणांक 0.90 से 0.95 तक प्राप्त हुआ ।
3. अंक गणित बीजगणित तथा ज्यामिति में त्रुटियां की दर क्रमशः 30.4%, 50.6% तथा 51.4% प्राप्त हुई।
4. उपचारात्मक अभ्यास करने के पश्चात विद्यार्थियों की उपलब्धियों में सार्थक रूप से अन्तर पाया गया।

3. **रामन जे. (1989)**

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों द्वारा केल्कुलस में की जाने वाली सामान्य त्रृटियों की पहचान करना। इस अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे:–

1. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण में प्राप्त उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण में प्राप्त उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. केल्कुलस में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली त्रुटियो को कम करने में उपचारात्मक

4. सेन गुप्ता (1989)

"युक्लडियन ज्यामिति के बारे में छात्र के आधारभूत सम्प्रत्यीकरण"।

इस अध्ययन में प्रमेंय 5 से 7 वर्ष के बच्चों को स्वयं प्रमाणित सत्य के रूप में दी जाती है और जिस क्रम में बच्चे उन्है समझते वह क्रम उस क्रम से भिन्न होता है, जिसमें वो दी जाती है यदपि अलग–अलग बच्चे अलग–अलग प्रत्यय को अलग–अलग उम्र में समझते है।

5. थिंड एस.के. (1990):–

ने यह पाया कि समाजिक वैयक्तिक कारक जैसे कि पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय या माता की शिक्षा एवं व्यवसाय का विद्यार्थियों की गणित विषय में समस्या समाधान योग्यता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। जबकि माता की शिक्षा का कक्षा 7 एवं 9 के विद्यार्थियों को गणित में समस्या समाधान योग्यता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

6. सरला एस. (1990)

ने माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आधुनिक गणित के चयनित क्षेत्रों की संपत्यात्मक त्रुटियों का विश्लेषण किया और पाया कि कई त्रुटियाँ बहुत बड़ी थीं, जो कि लिंग, विद्यालय परिवेश, विद्यालय प्रशासन, बुद्धिमत्ता, पढने की आदत, सामाजिक आर्थिक स्थिति से प्रभावित थी। बृद्धिमत्ता के साथ साथ त्रुटियाँ कम होती जाती है।

7. नालयीनी एस. (1991)

यह अध्ययन प्राथमिक स्तर पर अंकगणित शिक्षण में खेल विधि के प्रयोग पर केन्द्रित था। इस अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. प्रायोगिक समूह का माध्य नियंत्रित समूह की अपेक्षा बहुत ज्यादा पाया गया।
2. नम्बर गेम विद्यार्थियों को गणितीय संक्रियाओं में, दक्षता प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित करते है।

8. भाटिया कुसुम (1992)

यह अध्ययन यह परीक्षण करता है कि निर्देशनात्मक सामग्री उपचारात्मक शिक्षण उपकरण के रूप में प्रभावशाली होंती है इस अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्नालिखित थे–

1. अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में निर्देशात्मक कार्यक्रम पद्वति विद्यार्थियों तथा शिक्षकों दोनो के लिए निश्चित रूप से उपयोगी होती है।
2. उपचारात्मक शिक्षण के पश्चात् विद्यार्थियों की उपलब्धि में सार्थक रूप से अन्तर पाय गया।

9. कुमार ललीत (1996)

''गणित के प्रति प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन।''

1. 1/5 से कम प्राथमिक शिक्षकों का गणित के प्रति अभिवृत्ति उच्च थी। लगभग आधे शिक्षकों की अभिवृत्ति माप पर कम अंक थे।
2. उनमें शिक्षक और अशासकीय स्कूलो में काम करने वाले शिक्षकों की संख्या शिक्षिकाओं तथा शासकीय स्कूलो में काम करने वाले शिक्षकों की संख्या से अधिक थी।

10. गोएल मनीषा (1996)

''प्राथमिक स्तर के बच्चों की अंकगणित संबधित समस्याएँ''

1. विभिन्न स्तरों के बच्चों द्वारा की गई कुल त्रुटियों में सार्थक अन्तर था।
2. स्तर बढने के साथ–साथ कठीनाई स्तर भी भिन्न हो जाता है, इसलिए अंकगणित व विभिन्न क्षेत्रों में कठीनाई प्राप्त हुई।
3. ये कठीनाईया मुख्यतः संकल्पनाओ को गलत समझने, मूल तथ्यों को न समझ पा और गलत संक्रिया उपयोग करने के कारण होती है।

11. अथीपेन प्रेम (2002)

"मानसिक अंकगणित में साधारण तकनीकों के उपयोग का प्रभाव।"

1. मानसिक अंकगणित में साधारण तकनीकों के उपयोग से कक्षा 6 के छात्रों की गति और शुद्वता में वृद्वि हुई।

2. लडके हो या लडकियां तथा ग्रामीण हो या शहरी मानसिक अंकगणित को करने